Volume: 3 Issue: 9 Pages: 06-08

हरदोई के बी.एड. छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

[*1] डॉ. सुरेन्द्र प्रताप

[*1] सहायक प्रोफेसर, बी. एड. विभाग म० प्र० रा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई, उतार प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 10/Aug/2024
Accepted: 06/Sep/2024

***Corresponding Author**
डॉ. सुरेन्द्र प्रताप
सहायक प्रोफेसर, बी. एड. विभाग म० प्र० रा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई, उतार प्रदेश, भारत।

सारांश:
यह वर्तमान शोधपत्र हरदोई जनपद के बी0 एड0 छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का सामाजिक आर्थिक परिप्रेच्छ में एक अध्ययन में न्यादर्ष हेतु 300 छात्र एवं छात्राएँ सम्मिलित है। विभिन्न सम्मिलित SES समूहों के संवेगात्मक परिपक्वता के माध्यमानो के अन्तर के सार्थकता का परिक्षण किया गया है एवं संवेगात्मक परिपक्वता के लिये डॉ यषवीर सिंह (आगरा) और महेष भागर्व (आगरा) के परीक्षणो का प्रयागे किया गया है। सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी श्री राजवीर सिंह श्री राधेष्याम सिंह एवं श्री सतीश कुमार (राहेतक) परीक्षणा के का प्रयागे किया गया है। विभिन्न समूहों के संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मुख्य शब्द: संवेगात्मक परिपक्वता, सामाजिक आर्थिक स्तर, बी0 एड0 छात्र एवं छात्राएँ, उच्च मध्य एवं निम्न स्तर

प्रस्तावना

मानव जीवन को अभिप्रेरित करने में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेग के कारण ही व्यक्ति में व्यक्ति और समाज में स्नेह, सहानुभूति, करुणा, ममता के भाव विकसित होते है। संवेग के वशीभूति मनुष्य मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी आन और मर्यादा के लिए अपने प्राणों की बलि देने पर तत्पर रहता है। संवेगात्मक अभिव्यक्ति, शीतलमंद समीर की तरह जनमानस में चेतना का संचार करती है। संवेग सुखद एवं समरचनात्मक पक्षों से ओत प्रोत होने पर सृजन की ओर अग्रसर होते है। व्यक्ति के अनेक प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित होती है किन्तु वर्तमान समय में संगठनात्मक स्वरूप निरन्तर विखण्डित हो रहा है। व्यक्ति ईष्र्या, द्वेष क्रोध, मोह लोभ की आंधी में वशीभूत होकर अपना सब कुछ तबाह करने में लगा है। एक हल्की सी मधुर मुस्कान उसके लिए बहुत कठिन है क्योंकि वह जिस पथ पर चल रहा है उसमें विघटन, विनाश, तत्व जैसे कांटे बिखरे हुए है। वह आतंक व भय से इतना पीड़ित हो चुका है कि सब प्रकार से सुरक्षित होने पर भी वह अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है उसके अन्र्तनिहीत मन में विद्यमान चिन्ताएँ उसे बार-बार आत्महत्या करने के लिए बाध्य करती है।

वह बार-बार ऊँचाई छूने के बजाय मादक सागर तल की अथाह गहराई की ओर चला जा रहा है। इसका कारण यह है कि उसने केवल एक पक्ष को जिसमें भौतिकता की ही प्रमुखता है उसे ही धारण करने का प्रयास किया है उसने उस पक्ष की उपेक्षा की है इसका आधार मानवता है जो वस्तु को मापने की है उसे उन्होंने तोलने का प्रयास किया है और जो तोलने की है उसे मापने का प्रयास किया है। इसका कारण यह हुआ है कि वह अपने लक्ष्य से भटक गया है और उसके मनस्ताप एवं मनोविक्षप्तता के अनेक लक्षण उत्पन्न हो रहे है। वह उन महापुरुषों के बताए गये मार्ग का परित्याग कर रहा है जो सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में बांधने को अपेक्षित एवं अनिवार्य है । वह उन संवेगों का परित्याग कर रहा है जो सौद्धार्य एवं सम्बद्धता के लिए आवश्यक है। वह उन कृत्यों का परित्याग कर रहा है जो दायित्वों के निर्वाह के लिए आवश्यक है। वह उन व्यक्तियों की संगति ग्रहण कर रहा है जिनमें तामसिक एवं आसुरी शक्तियाँ विद्यमान है। यही कारण यह कि वर्तमान समाज संवेगों के नैराष्य में डूबा हुआ है तनाव के आतंक में संतृप्त हो रहा है न उसमें सृजन है और न कहीं पर आत्मीयता नजर आती है।

वह राग-विराग, सुख-दुख के द्वन्दों के दल-दल में निरन्तर डूबता जा रहा है ऐसी स्थिति में आवश्यक है की मानवीय चेतना को रचनात्मक सम्बल प्रदान किया जाए जिससे सम्पूर्ण जन-मानस में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की स्थापना हो सके। सम्पूर्ण समाज धीरे-धीरे छिन्न भिन्न हो रहा है। भौतिक प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रत्येक व्यक्ति अपने अहम की सन्तुष्टि के लिए परमार्थ की भावना को त्याग कर स्वार्थ के भंवर में फंसता जा रहा है यही कारण है कि मानवीय चिन्तन को यह धरातल नहीं मिल पा रहा है जिससे मानवता का अपेक्षित विकास नहीं हो रहा है। व्यक्ति अपने संवेगों पर नियन्त्रण करके अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके तथा अपनी आकांक्षाओं को संतुष्ट कर सके तथा वर्तमान में अपनी स्वंय की इच्छाओं की सन्तुष्टि के लिए मादक पदार्थों के सेवन में डूबे जाने पर भी अपने को चीख पुकारों से बचा नहीं पाता। उसमें विद्यमान वेदना की टीस बार-बार मानस पर प्रहार करती है जिसके फलस्वरूप नैराष्य एवं तनाव के दल-दल में डूबता ही जाता है। इससे मुक्त होने के लिए जितना प्रयास करता है उतना ही अधिक डूबता है क्योंकि उसके मन में भय, आक्रोश एवं आतंक इतना बैठ चुका होता है वह अपने आप को समाज में सक्षम महसूस नहीं करता है ऐसी स्थिति में संवेगों का संगठनात्मक स्वरूप अस्त-व्यस्त हो रहा है। मानव मानव में प्रेम का विकास न होकर घृणा का विकास हो रहा है। उसके जीवन शैली में अभिशाप एवं कटुता का विष घुलता जा रहा है एवं उसके चेतना में प्रदूषण की काई फैल रही है।

इस प्रकार की परिस्थिति में सम्पूर्ण मानव समाज में संवेगों की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है कि सम्पूर्ण परवेश में स्नेह और प्रेम को प्रभावित किया जाये जिससे घृणा की राह से बचा जा सके। संवेगों से एक ओर क्रियात्मक शक्ति का विकास होता है वहीं दूसरी ओर संवेगों की समरसता एवं सम्बद्धता की भावनाओं के यथार्थ का बोध होता है। आज व्यक्ति जिस प्रकार के अन्तद्र्वन्दों दुश्चिन्ताओं का शिकार हो रहा है उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह अपने संवेगों की समग्रता को बनाये रखने में सक्षम नहीं है। उसकी दशा उस नाविक के समान हो रही है जो अपनी अज्ञानता के कारण उत्सुंग लहरों के भवंर जाल में अपना सब कुछ खो बैठता है। व्यक्ति अपने विवेक रचनात्मक कार्यों में न करके विध्वन्सकारी कार्यों में करता है यही कारण है कि आज सम्पूर्ण मानवता समाज तामसिक प्रवृतियों की घरोहर बनता जा रहा है जो चाहते हुए भी निकल नहीं पा रहा है। मानव स्वभाव से प्रकृति का सबसे अधिक चेतन्य प्राणी है लेकिन अपने परवेश की विसंगतिओं में उलझने के कारण वह आसुरिक व पैशाचिक प्रवृतियों की ओर अग्रसर हो रहा है।

वह जहाँ एक ओर दूसरों को आंतकित कर रहा है वहीं दूसरी ओर अपने पथ से विचलित हो रहा है उसके हृदय में उठने वाली क्रोधाग्नि उसके समूल को नष्ट कर रही है। विषय वेदनाओं की घनीभूत क्रियाओं से आच्छादत वह तिमिरतोम की देहरी में अरण्य क्रन्दन करता हुआ नेराष्य में डूब रहा है। वह छल, अहम् एवं कपट की घिनौनी राजनीति का शिकार होता हुआ स्वार्थ की बेड़ियों में अपनी प्यास बुझाने के लिए छटपटा रहा है। उसके शोक सन्तप्त मानस में बहने वाली करुणा की नदी निष्प्राण हो चुकी है। ऐसी परिस्थिति में मानव समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि उसमें मनवांछित गुणों एवं आदर्श गुणों का विकास किया जाये जिससे उसके अंदर छिपी हुई अनुभूतियों को व्यक्त किया जा सके। जो भौतिकता के आडम्बर में आच्छादित व्यक्ति सुख एवं शान्ति से रहित वासनाओं के भंवर जाल में फंसता जा रहा है । इसका परिणाम वह हो रहा है कि वह एक पल भी प्रगाढ निद्रा का सुख नहीं ले पा रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा संवेगात्मक परिपक्वता के लिए EMS डॉ. यशवीर सिंह (आगरा), डॉ. महेश भार्गव (आगरा) के परीक्षण का प्रयोग किया गया है। तथा सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी श्री राजवीर सिंह (रोहतक), श्री राधेश्याम (रोहतक), श्री सतीश कुमार (रोहतक) के परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जो नेशनल साइक्लोजीकल कारपॉरेशन 4/230 कचहरी घाट आगरा- 282004 (इण्डिया) द्वारा निर्मित था।

न्यादर्ष:- हरदोई जिले के बी.एड. छात्रों पर यह अध्ययन किया गया अध्ययन में सम्मलित विभिन्न SES समूहों के संवेगात्मक परिपक्वता के अंको के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण किया गया।

t-test for difference between means of two groups :-											
Groups		**N**	**Mean**	**SD**	**N**	**Mean**	**SD**	**SE(Diff. in Means)**	**t-value**	**p-value**	**Sig**
High-B	High-G	78	86.56	14.007	42	91.81	28.334	3.861	1.359	0.1769	NS
High-B	Medium-G	78	86.56	14.007	166	92.35	21.934	2.713	2.133	0.0339	*
High-B	Low-G	78	86.56	14.007	92	86.93	12.324	2.020	0.184	0.8546	NS
Medium-B	High-G	158	96.53	25.462	42	91.81	28.334	4.528	1.043	0.2983	NS
Medium-B	Medium-G	158	96.53	25.462	166	92.35	21.934	2.636	1.586	0.1136	NS
Medium-B	Low-G	158	96.53	25.262	92	86.93	12.324	2.831	3.389	0.0008	**
Low-B	High-G	64	85.50	18.714	42	91.81	28.334	4.566	1.382	0.1700	NS
Low-B	Medium-G	64	85.50	18.714	166	92.35	21.934	3.104	2.207	0.0283	*
Low-B	Low-G	64	85.50	18.714	92	86.93	12.324	2.485	0.577	0.5645	NS
**Significant at 1% level			*Significant at 5% level			NS - Not Significant					

t-test for difference between means of two groups :-											
Groups		**N**	**Mean**	**SD**	**N**	**Mean**	**SD**	**SE(Diff. in Means)**	**t-value**	**p-value**	**Sig**
Boys	Girls	300	91.59	22.185	300	90.61	20.684	1.751	0.556	0.5785	NS
High-B	Medium-B	78	86.56	14.007	158	96.53	25.462	3.093	3.223	0.0015	**
High-B	Low-B	78	86.56	14.007	64	85.50	18.714	2.748	0.387	0.6992	NS
Medium-B	Low-B	158	96.53	25.462	64	85.50	18.714	3.516	3.138	0.0019	**
High-G	Medium-G	42	91.81	28.334	166	92.35	21.934	4.033	0.134	0.8936	NS

High-G	Low-G	42	91.81	28.334	92	86.93	12.324	3.504	1.391	0.1665	NS
Medium-G	Low-G	166	92.35	21.934	92	86.93	12.324	2.480	2.183	0.0299	*
**Significant at 1% level			*Significant at 5% level			NS — Not Significant					

व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में सम्पूर्ण न्यादर्ष के प्रदत्तों का अवलोकन से वह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न SES समूहों के अंको के मध्यमान के अंतर की सार्थकता का परीक्षण में समूह 01 में समस्त 300 छात्र व समस्त 300 छात्राऐं है। समूह 01 के समस्त छात्रों का मध्यमान 91.59 व मानक विचलन 22.185 व पहले समूह की छात्राओं का माध्य 90.61 व मानक विचलन 20.684 है तथा टी. मूल्य, मध्यमानों के अन्तर में एस.ई.डी.(एम.) का भाग देकर निकालने पर 0.556 है व सम्भावना मूल्य 0.5758 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया। समूह 02 के उच्च SES छात्र व निम्न SES छात्रों के मध्य संभावना मूल्य 0.0015 है और टी. मूल्य 3.223 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर देखा गया है । समूह 03 के उच्च SES छात्र व निम्न SES छात्रों के मध्य संभावना मूल्य 0.6992 व टी. मूल्य 0.387 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया। समूह 04 के मध्य SES छात्र व निम्न SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.0019 व टी. मूल्य 3.138 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया समूह 05 में उच्च SES छात्रा व मध्य SES छात्रों के मध्य संभावना मूल्य 0.8936 व टी. मूल्य 0.134 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही है समूह 06 के उच्च SES छात्रा व निम्न SES छात्राओं के मध्य संभावना मूल्य 0.1665 व टी. मूल्य 1.391 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही है समूह 07 में मध्य SES छात्रा व निम्न SES छात्राओं के मध्य संभावना मूल्य 0.0299 व टी. मूल्य 2.183 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया है। समूह 08 के उच्च SES छात्र व उच्च SES छात्राओं के मध्य संभावना मूल्य 0.1769 और टी. मूल्य 1.359 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया है।

समूह 09 के उच्च SES छात्र व मध्य SES छात्राओं के बीच संभावना मूल्य 0.0339 व टी. मूल्य 2.133 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है। समूह 10 के उच्च SES छात्र व निम्न SES छात्राओं के मध्य संभावना मूल्य 0.8546 व टी. मूल्य 0.184 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया। समूह 11 के मध्य SES छात्र और उच्च SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.2983 व टी. मूल्य 1.043 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया। समूह 12 के मध्य SES छात्र व मध्य SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.1136 व टी. मूल्य 1.586 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया। समूह 13 के मध्य SES छात्र व निम्न SES छात्रों के मध्य सम्भावना मूल्य 0.0008 तथा टी. मूल्य 3.389 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। समूह 14 के निम्न SES छात्र व उच्च SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.1700 व टी. मूल्य 1.382 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया है। समूह 15 के निम्न SES छात्र व मध्य SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.0238 व टी. मूल्य 2.207 है जो व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है। समूह 16 के निम्न SES छात्र व निम्न SES छात्राओं के मध्य सम्भावना मूल्य 0.5645 और टी. मूल्य 0.577 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही है।

अतः संवेगात्मक परिपक्वता में सभी समूहों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि उच्च SES छात्र व मध्य SES छात्रों का सम्भावना मूल्य 0.0015 टी. मूल्य 3.223 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया अतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर कह सकते है कि उच्च SES छात्र व मध्य SES छात्रों के मध्य संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया गया। इसी प्रकार मध्य SES छात्र व निम्न SES छात्रओं के मध्य, मध्य SES छात्रा व निम्न SES छात्राओं के मध्य उच्च SES छात्र व मध्य SES छात्रा और मध्य SES छात्र व निम्न SES छात्रा के मध्य, निम्न SES छात्र व मध्य SES छात्रओं के मध्य भी अवलोकन करने से पता चलता है कि इन समूहों में मध्य भी संवेगात्मक परिपक्वता में अंतर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता कु. सुषमा:- "सामाजिक आर्थिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता और शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध" एम. एड. अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय आगरा 2018।
2. याज्ञिक स्वर्णलता:- विभिन्न विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों का संवेगात्मक व सामाजिक परिपक्वता सृजनात्मक तथा शैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन पी. एच.-डी. 2010 डॉ. बी. आर. ए. विश्वविद्यालय आगरा।
3. गैरिट ई. हैनरी:- स्टेटिस्टिक्स इन साइक्लोजी एण्ड एजुकेशन बोम्बे 1981।
4. राय पारसनाथ:- अनुसंधान परिचय, आगरा 1996।
5. चैहान एस.एस.:- एडवांस एजुकेशन साइक्लोजी 2021।
6. कपिल एच. के:- अनुसंधान विधियां आगरा 2010।
7. गर्ग एवं अन्य 2003:- ऐशियन जर्नल ऑफ साइक्लोजीकल वाल्यूम- 1 नं 2 पृष्ठ 19-22।
8. एंडरसन एवं एन्य 2003:- जर्नल ऑफ साइक्लोजीकल वाल्यूम- 115, 1983 सेकेण्ड हाफ पृष्ठ 185-191 ।
9. केलहन, कैरोलिन एम. तथा अन्य 2022:- दा सोशियल इम्योशनल डवलपमेन्ट ऑफ निफ्टेड ऐडीलिसेन्ट वोमन शेयर रिव्यू, वाल्यूम 17 (2), पृष्ठ 99-105।
10. गिरीजा पी. आर. 2022:- इण्डियन जर्नल ऑफ एप्लाइड साइक्लोजी 2022 जनवरी वाल्यूम 23, नं. 1 पृष्ठ 17-24 ।